भावना बिना किसी से प्राप्ति नहीं

आपने बहुत सारे ऐसे संत-महात्माओं की जीवनी पढ़ी या सुनी होगी जिन्होंने समाज में व्याप्त अनैतिक व अव्यवहारिक रीति-रिवाज़ों-परंपराओं का पुरज़ोर विरोध किया और कटाक्ष भी किया। कटाक्ष इस बात का कि आप सभी अपने कर्म पर विश्वास कम करते हो लेकिन भगवान और भक्ति को लेकर बहुत सारी भ्रांतियों के बीच जीते रहते हो। उन्होंने हर पल समाज के उन पहलुओं पर ही ध्यान दिया जो अंधविश्वासों और भ्रमों से ओत-प्रोत था। उसको ही ठीक करने में वे तत्पर रहते थे, ये हो गया संत-महात्माओं का एक पक्ष।

आज के समाज को हम लेते हैं, समाज-सुधारकों की फ़हरिस्त बहुत लम्बी है। सभी अपने-अपने क्षेत्र को लेकर बहुत ज़्यादा चिंतित भी हैं, लेकिन अध्यात्म का पहलु सबसे अलग है और अद्वितीय है। क्यों है, क्योंकि इसमें ज़्यादातर समझ किसी चीज़ की आ जाये तो उसके आधार से हम कर्म कर लेते हैं, लेकिन पूरी समझ न होने के कारण हम बुद्धि के स्तर पर इस बात को समझते हैं, लेकिन सबकी भावनाओं को ठेस भी पहुंचाते रहते हैं। जैसे एक संत हुए जो कहते थे, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', इसका भावार्थ सबको पता है कि मन अगर शुद्ध है, पवित्र है तो आपको गंगा में स्नान करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप व्यक्ति के भाव को देखो, भाव से उसने अपने आप को उस स्थान पर लाकर खड़ा कर लिया जहाँ बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी नहीं पहुंच पाये। भावना के कारण हम सभी बहुत ऐसी बातें कर जाते हैं जो हम नहीं करना चाहते। उदाहरण के लिए अगर मेरा किसी के प्रति अच्छा भाव नहीं है या अच्छी भावना नहीं है तो वो अगर अच्छी बात भी कहे तो हमें वो बात बुरी लगती है या हम अनसुना कर देते हैं, या किसी के प्रति ईर्ष्या का भाव है तो अगर वो सामान्य बात भी सुना रहा होगा तो हमें कमेंट नज़र आता है। हम सोचते हैं कि शायद मेरे लिए ही कहा है। क्यों ऐसा हो रहा है, क्योंकि हमने अपनी समझ तो बढ़ाई अध्यात्म में आने के बाद, लेकिन भाव नहीं बदले। भाव न बदलने के कारण आज हमारी ये दुर्गति है। अगर आप दुनिया में कहीं किसी जगह पर जाकर रहना चाहते हैं और वहाँ पर एक भी व्यक्ति न हो और आपको अकेले रहना हो, आप रह पायेंगे! चाहे कितना ही सस्ता फ्लैट हो, फिर भी आप जब फ्लैट लेते हैं तो देखते हैं कि इस एरिया में कितने फ्लैट बिके। तो आप बताओ कि फ्लैट की कीमत है या व्यक्ति की कीमत है? हमारे भाव व्यक्तियों के प्रति बदल गये और भाव न रखने के कारण आज ये हालत है। अब वो भाव बदल कर जड़-मूर्तियों के लिये हो गये। आप ये बताओ, जो चैतन्य लोगों के साथ रहना दूभर समझता है, उनके लिए ताले लगा देता है, उनके साथ बातचीत करने में उसे विवशता नज़र आती है। तो अगर वो जड़-मूर्तियों के साथ भाव रखेगा तो उससे उसे क्या प्राप्ति होगी। इसीलिए भाव के आधार से भावना हमारी किसी के प्रति बनती है। हम पूरे जीवन ज्ञान-योग करें, लेकिन मनुष्यों के प्रति न भाव बदले, न भावना बदली। रहना आखिर हमको मनुष्यों के साथ ही है, लेकिन अगर भाव और भावना ठीक नहीं होगी तो प्राप्ति कैसे होगी! इसीलिए आज किसी को किसी से कुछ मिल नहीं रहा है, क्योंकि भावना नहीं है। शिव निराकार परमात्मा भी हमको यही सिखाते आ रहे हैं कि सारे ज्ञान-योग का सार भाव ही तो है। हमारा शारीरिक भाव आया, पद का भाव आया, स्थान का भाव आया, रंग-रूप का भाव आया, तो ये सारे भाव हमको गर्त में ले गये और हमारी भावना भी बदलती चली गई। भाव अगर माता-पिता के लिए न हों तो उनके लिए भावना कैसी बनेगी हमारी! क्या हम सेवा कर पायेंगे! ऐसे ही शिव परमात्मा हमें आत्मिक भाव लाने के लिए कहते हैं। जैसे ही आप आत्मिक भाव लायेंगे, सबके लिए भावना बदल जायेगी।

> जब तक परमात्मा के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के घर के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के बच्चों के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के एक-एक चीज़ के लिए भाव नहीं होगा, तब तक हम न उस भावना के साथ सेवा कर पायेंगे और न ही दूसरों को प्राप्ति करा पायेंगे।

किसी के कर्म, किसी के रंग-रूप पर हम नहीं जायेंगे, हम सिर्फ और सिर्फ वास्तविक रूप से जुड़ेंगे और देवत्व की तरफ बढ़ेंगे। क्योंकि देवतायें सबके लिए बराबर हैं, सबके लिए समान हैं और देवताओं के लिए सब समान हैं। इसीलिए देवी-देवताओं की जड़-मूर्तियों के लिए भी सबमें भावना है। इसीलिए तुलसीदास ने कहा है, 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी'। इसलिए बिना भाव ज्ञान रूखा-सूखा है। जब ज्ञान के आधार से, समझ के आधार से भावना जुड़ जाती है, उस अध्यात्म में रस बढ़ जाता है। और भावना से सबसे बड़ी चीज़ जो होती है वो है हमारी एकता, एक-दूसरे के प्रति विश्वास, एक-दूसरे के बारे में अच्छा सोचना आदि-आदि बढ़ जाता है।

हमारी ये दृढ़ मान्यता है कि जब तक परमात्मा के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के घर के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के बच्चों के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के एक-एक चीज़ के लिए भाव नहीं होगा, तब तक हम न उस भावना के साथ सेवा कर पायेंगे और न ही दूसरों को प्राप्ति करा पायेंगे। क्योंकि जैसा हम लोगों के लिए भावना कम रखते हैं तो लोग भी हमारे लिए भावना कम रखेंगे, तो प्राप्ति कम होगी। और हम सोचते हैं कि हम इतना कुछ करते हैं, इतना परमात्मा के एक-एक श्रीमत पर चलते हैं, फिर भी हमें प्राप्ति क्यों नहीं हो रही! तो सब कुछ भावना है।

प्रश्न : मैं इलाहाबाद से गजानन मिश्र हूँ। आप कहते हैं कि योगबल, संकल्प बल से सतयुग में संतान उत्पत्ति होती है, आप भी वर्षों से राजयोग कर रहे हैं तो क्या आप भी ये चमत्कार करके दिखा सकते हैं? यदि आप अभी ये करके दिखा दें तो हम आपके फॉलोअर बनने को तैयार हैं। और आप जो कहेंगे हम वो मानेंगे।

उत्तर : हम तो भगवान के बच्चे हैं हम तो सबको उससे जोड़ना चाहते हैं। दूसरी बात हम जो कहेंगे वो आप मानेंगे ये बात भी हम कैंसल कर रहे हैं। जो भगवान कहे वो आपको मानना है। और ये भगवान ने कहा है और ये हमारे वेदों में भी है कि सृष्टि के आदि में अमैथुनी सृष्टि चली, सृष्टि माना संतान, रचना। अमैथुनी विकारों के बिना। पवित्रता के बल से, अमैथुनी सृष्टि हुई, संतान हुई। तो वास्तव में मनुष्य समझ नहीं पाते, उनको आजकल का ये विषय-वासनाओं का, भोग-विलास का जो जीवन है, उससे जो संतान उत्पत्ति हो रही है, उसी के बारे में पता है। उन्हें पता ही नहीं योगबल क्या होता है। उन्हें पता ही नहीं कि सृष्टि के आदि की, सतयुग की प्रकृति की स्थिति क्या थी इसलिए मनुष्य के मन में ये प्रश्न उठते हैं। रही बात योगबल से संतान उत्पन्न करने की आपको ये मालूम होना चाहिए, योगबल से संतान उत्पत्ति तभी हो सकती है जब आत्मा और शरीर दोनों ही पावन हों। लेकिन इस कलियुग में कोई कितना भी बड़ा राजयोगी क्यों न हो। उसका देह पावन नहीं होता। क्योंकि देह पतित तत्वों से बना है, देह पतित माँ-बाप के सम्बन्ध से बना है। इसलिए देह में इम्प्युरिटी रहती ही है। इसलिए संकल्प बल को, संकल्प के कमांड को हमारा देह स्वीकार नहीं करता। हमेशा मानता नहीं है। जब देह और आत्मा दोनों पवित्र हो जायेंगी तो आत्मा के संकल्प देह तुरंत स्वीकार करेगा। और उसमें वो रिएक्शन हो जायेंगे जिससे संतान उत्पन्न होगी। तो ये कार्य अभी नहीं किया जा सकता। आपको अगर जानना हो कि योगबल क्या होता है तो आपको राजयोग का अभ्यास करना होगा। बहुत सारे चमत्कार इस संसार में होते हैं, आज दो मुख वाले बच्चे पैदा हो जाते हैं, चार हाथ वाले भी पैदा हो जाते हैं। ये सब भी तो चमत्कार हैं। लेकिन इन सब चमत्कार से हमें क्या मिलता है?

ज्ञान लेना, राजयोग का अभ्यास करना, परमात्म मिलन का सुख लेना उससे बड़ा चमत्कार और कोई नहीं। जिस गुरु ने चमत्कार दिखाये उसके लाखों शिष्य। और ब्रह्माकुमारीज़ को इतने साल हो गये फिर भी पंद्रह लाख ही इसके फॉलोअर्स कहें या इसके अनुयायी हैं जिसको फॉलो कर रहे हैं। लोग ज़रूर सोचते होंगे कि क्या पंद्रह लाख पवित्र आत्मायें हैं! वो पंद्रह लाख महान आत्मायें हैं, पंद्रह लाख लीडर्स तैयार हुए हैं। पंद्रह लाख ऐसी आत्मायें तैयार हुईं जिनका मनोबल बढ़ा-चढ़ा है, जिन्होंने पांचों विकारों को चैलेंज किया हुआ है। इसलिए संख्या बढ़ाना, हमारे पीछे लोग भाग आयें, हमारे फॉलोअर्स बन जायें, हम अथाह सम्पत्ति के मालिक बन जायें ये हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारे पास तो जो आयेगा हम उसे परमात्मा की ओर ले चलेंगे। हम उसे पवित्रता का मार्ग दिखायेंगे। तो न तो हमें चमत्कार दिखाने हैं, और न ही इसके पीछे लोगों को आकर्षित करना है। क्योंकि हमारा लक्ष्य परमात्मा ने जो दिया है आत्माओं को पावन बनाना, और इस धरा को स्वर्ग बनाना है।

प्रश्न : मैं ब्र.कु. राजेश हूँ इंदौर से। शिव बाबा कहते हैं कि मुझे कम से कम आठ घंटा याद करो। ये कैसे सहज हो और दूसरा आठ घंटें में कौन-कौन-सी बातें शामिल हैं?

उत्तर : इसको हम आठ घंटे योग के अलावा एक दूसरा नाम दे दें, अव्यक्त स्थिति। यानी व्यक्त भाव से परे। इसमें हम मुरली सुनने और सुनाने को भी जोड़ लें। क्योंकि उसमें भी हम व्यक्त भाव से परे हैं, ईश्वरीय महावाक्यों का आनंद लेते हैं और देते हैं,लेकिन कुछ चीज़ों को सारा दिन प्रैक्टिस करनी चाहिए। इसमें पॉवरफुल योग परमधाम में, इसमें शिवबाबा से बातें करना, जिसको हम रूहरिहान कहते हैं। अपने फरिश्ते स्वरूप का अभ्यास करना, अपने पाँच स्वरूपों का अभ्यास करना, स्वमान का अभ्यास, अशरीरीपन का अभ्यास, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास, सबको गुड वायब्रेशन देने की प्रैक्टिस ये सब इसमें काउंट हो जायेंगे।

मैं एक सुन्दर-सी प्लानिंग देना चाहता हूँ सबको कि जो आठ घंटे योग के अभिलाषी हैं इसमें ज़्यादा बैठने की आवश्यकता ही नहीं है। कर्म में ही हमें इसकी प्लैनिंग करनी होगी। अलग-अलग कार्यों में अलग-अलग प्रैक्टिस हो। परमधाम में भी योग लगायें, सूक्ष्मवतन में भी रूहरिहान करें, बापदादा से वरदान भी लें और पाँचों स्वरूपों का अभ्यास भी करें और उसमें विश्व को वायब्रेशन देने का कार्य भी करें। फिर जैसे इस शरीर को तैयार करने के लिए एक बहुत अच्छी प्रैक्टिस है- मैं आत्मा हूँ ये देह मेरा मंदिर है। मैं मूर्तिचेतन, मैं मूर्ति इस मंदिर में हूँ, इसकी सफाई, इसका श्रृंगार कर रही हूँ। बहुत अच्छी फीलिंग देगी। स्नान आदि करते हुए अशरीरीपन की प्रैक्टिस और अपने भविष्य स्वरूप को देख लिया करें बीच-बीच में हम ऐसे थे, इतने डिवाइन थे, हमारी कंचन काया थी, हम कितने पवित्र थे, उसको भी याद कर लिया करें। तो ये जो एक डेढ़ घंटा समय है वो हम इस तरह स्वमान में व्यतीत करें और इस तरह प्रैक्टिस में व्यतीत करें। हो सकता है पंद्रह मिनट अव्यक्त मुरली का अध्ययन भी कर लें। फिर मुरली सुनने जायें और फिर बहुत तन्मयता के साथ महावाक्य सुनें। भगवान मुझसे बात कर रहा है और मैं आत्मा यहाँ बैठकर कानों से मुरली सुन रही हूँ। बीच-बीच में ये प्रैक्टिस करते हुए मुरली सुनेंगे तो मुरली का पौना घंटा भी योग में काउंट हो जायेगा। हमारी स्थिति बहुत अच्छी होगी, हम वहाँ से बहुत आनंदित होकर उठेंगे। उसके बाद जब नाश्ता करेंगे और कार्य पर जायेंगे तो ये सब करने से पहले बापदादा का आह्वान करें। उनके साथ ही हम आगे बढ़ें। शाम को फिर ड्रामा की स्मृति के साथ वापिस आयें। आज का ये ड्रामा का कार्य पूरा हुआ। मैं अपने घर मंदिर में जा रहा हूँ। बहुत गुड फीलिंग के साथ हमारा घर बहुत सुंदर है। सब देवकुल की आत्मायें हैं। कितना सबकुछ अच्छा भगवान ने हमें दिया है। इस फीलिंग के साथ घर लौटें। जितने भी कार्य कर रहे हैं हम सबसे पहले उसकी लिस्ट बना लें। फिर इस तरह से भिन्न-भिन्न अभ्यास कर लें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com